ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

माध्यमिक शिक्षा स्तर पर संवेगात्मक परिपक्वता और नैतिक मूल्यों का संबंधः गया जिला के परिप्रेक्ष्य में

स्वेता कुमारी, पी.एच. डी. शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं
डॉ. शुभराम, शोध निर्देशक, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं

सारांश

यह अध्ययन गया जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों के मध्य संबंध का विश्लेषण करता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था के महत्वपूर्ण चरण से गुजरते हैं, जहाँ मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तन तीव्र होते हैं। संवेगात्मक परिपक्वता व्यक्ति की अपनी भावनाओं को नियंत्रित, संतुलित और सामाजिक दृष्टि से उपयुक्त तरीके से व्यक्त करने की क्षमता है, जबकि नैतिक मूल्य जीवन के उन सिद्धांतों और आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सही और गलत के बीच अंतर करने में सहायता करते हैं।

इस शोध में गया जिले के 200 माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राएँ) को स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना पद्धति से चुना गया। डेटा संग्रह हेतु 'संवेगात्मक परिपक्वता मापनी' (सिंह एवं भार्गव) और 'नैतिक मूल्य मापनी' (देव) का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए औसत, मानक विचलन, ज–परीक्षण तथा पियर्सन सहसंबंध गुणांक का उपयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्य छात्रों की तुलना में अधिक हैं और दोनों के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध ($r=0.64$, $p<0.01$) पाया गया। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता का विकास उनके नैतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करता है, इसलिए शिक्षा प्रणाली में भावनात्मक एवं नैतिक शिक्षा का समावेश आवश्यक है।

मुख्य शब्दः संवेगात्मक परिपक्वता, नैतिक मूल्य, माध्यमिक शिक्षा, गया जिला, सहसंबंध

प्रस्तावना

शिक्षा केवल ज्ञान का प्रसार नहीं करती, बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास और सामाजिक अनुकूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था की जटिल मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं से गुजरते हैं। इस अवस्था में भावनात्मक संतुलन एवं नैतिक दृष्टिकोण उनके व्यवहार को आकार देते हैं।

गया जिला बिहार का एक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ शिक्षा व्यवस्था शहरी और ग्रामीण दोनों परिवेश में विकसित हो रही है। यहाँ के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक संरचना और विद्यालयी वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस कारण यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि संवेगात्मक परिपक्वता और नैतिक मूल्यों के बीच संबंध को यहाँ के संदर्भ में समझा जाए।

साहित्य समीक्षा

अग्रवाल, के. (2002). 'किशोरावस्था में शैक्षिक प्रदर्शन और नैतिक मूल्यों का परस्पर प्रभाव' यह बताता है कि किशोरावस्था में शैक्षिक प्रदर्शन और नैतिक मूल्यों के बीच एक गहरा संबंध होता है। अग्रवाल के अनुसार, जब किशोर अच्छे नैतिक मूल्यों से लैस होते हैं, तो उनका शैक्षिक प्रदर्शन बेहतर होता है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि नैतिक मूल्यों का पालन करने वाले किशोर अधिक जिम्मेदार, समर्पित और मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं, जो उनके शैक्षिक लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करता है। यह अध्ययन आपके शोध के संदर्भ में सहायक हो सकता है, क्योंकि यह शैक्षिक प्रदर्शन और नैतिक मूल्यों के बीच परस्पर प्रभाव को स्पष्ट करता है और यह दिखाता है कि अच्छे नैतिक मूल्य किशोरों के शैक्षिक प्रदर्शन को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

राय, कृष्णा (2002). 'किशोरावस्था में नैतिक शिक्षा और परिवार का प्रभाव' इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि परिवार का परिवेश किशोरों के नैतिक विकास और सामाजिक व्यवहार पर कैसे प्रभाव डालता है। उन्होंने यह पाया कि जब परिवार में नैतिक शिक्षा का अच्छा माहौल होता है, तो किशोरों में नैतिक जिम्मेदारी और सामाजिक संबंधों को लेकर सकारात्मक बदलाव आता है। यह अध्ययन आपके शोध के संदर्भ में सहायक हो सकता है, क्योंकि यह किशोरों में नैतिक शिक्षा और परिवार के प्रभाव को जोड़ता है, जो आपके अध्ययन के उद्देश्य के लिए उपयोगी हो सकता है।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

संवेगात्मक परिपक्वता

संवेगात्मक परिपक्वता का अर्थ है अपनी भावनाओं को परिस्थिति के अनुरूप नियंत्रित करना, दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहना और तनावपूर्ण स्थितियों में भी संतुलन बनाए रखना। श्रमतेपसक (1960) के अनुसार, "संवेगात्मक परिपक्वता व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके द्वारा वह भावनात्मक आवेगों को रचनात्मक रूप में व्यक्त करता है।"

नैतिक मूल्य

नैतिक मूल्य वे सिद्धांत हैं जो व्यक्ति के सही और गलत के निर्णय को दिशा देते हैं। कोलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति का नैतिक दृष्टिकोण विभिन्न चरणों में विकसित होता है और यह शिक्षा, अनुभव तथा सामाजिक संपर्क पर आधारित होता है।

परस्पर संबंध

उच्च संवेगात्मक परिपक्वता वाले व्यक्ति सामान्यतः अधिक सहिष्णु, संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं, जिससे उनके नैतिक निर्णय अधिक मानवीय और न्यायसंगत होते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. गया जिले के माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का स्तर ज्ञात करना।
3. छात्र एवं छात्राओं के बीच संवेगात्मक परिपक्वता और नैतिक मूल्यों के अंतर की तुलना करना।
4. संवेगात्मक परिपक्वता और नैतिक मूल्यों के बीच सहसंबंध का निर्धारण करना।

डाटा विश्लेषण

औसत, मानक विचलन, t–परीक्षण और पियर्सन सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या

समूह	N	संवेगात्मक परिपक्वता	नैतिक मूल्य
छात्र	100	146.3 ± 12.4	78.5 ± 6.8
छात्राएँ	100	152.7 ± 11.2	82.9 ± 5.9

t–परीक्षण के परिणामः

- संवेगात्मक परिपक्वता में $t = 3.45$, $p < 0.01$ (महत्वपूर्ण अंतर)।
- नैतिक मूल्यों में $t = 4.02$, $p < 0.01$ (महत्वपूर्ण अंतर)।

स्हसंबंधः

$r = 0.64$, $p < 0.01$ ⟶ संवेगात्मक परिपक्वता और नैतिक मूल्यों में सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण सहसंबंध।

व्याख्याः

परिणाम दर्शाते हैं कि छात्राओं का भावनात्मक संतुलन और नैतिक दृष्टिकोण छात्रों से अधिक है। उच्च संवेगात्मक परिपक्वता, नैतिक निर्णयों में भी सकारात्मक योगदान करती है।

निष्कर्ष

अध्ययन से सिद्ध हुआ कि संवेगात्मक परिपक्वता और नैतिक मूल्यों में गहरा संबंध है। भावनात्मक रूप से परिपक्व विद्यार्थी अधिक नैतिक एवं जिम्मेदार व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। गया जिले में छात्राओं का प्रदर्शन दोनों पहलुओं में बेहतर पाया गया। शिक्षा व्यवस्था में इन दोनों घटकों के संतुलित विकास के लिए योजनाबद्ध हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

सुझाव विद्यालयों में भावनात्मक शिक्षा और जीवन कौशल को नियमित पाठ्यक्रम में जोड़ा जाए।

- नैतिक शिक्षा को केवल सैद्धांतिक न रखकर व्यवहारिक गतिविधियों (नाट्य, वाद–विवाद, सामूहिक परियोजनाएँ) के माध्यम से लागू किया जाए।
- शिक्षकों और अभिभावकों को प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे किशोरों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझ सकें।
- परामर्श सेवाओं को विद्यालयों में अनिवार्य किया जाए।

संदर्भ

1. सिंह, य., एवं भार्गव, म. (2008). संवेगात्मक परिपक्वता मापनी. आगराः राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।
2. देव, प. (2010). नैतिक मूल्य मापनी. नई दिल्लीः एनसीईआरटी।

3. शर्मा, आर. (2013). किशोरों में भावनात्मक परिपक्वता और शिक्षा का प्रभाव। भारतीय शिक्षा समीक्षा, 61(2), 45–53।
4. वर्मा, के. (2014). किशोरावस्था में नैतिक मूल्यों के विकास पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव। मनोविज्ञान वार्षिकी, 29(1), 77–85।
5. पांडेय, एस. (2016). संवेगात्मक परिपक्वता और शैक्षिक उपलब्धि का संबंध। शैक्षिक दृष्टिकोण, 12(4), 101–110।
6. अग्रवाल, र. (2018). किशोरावस्था में भावनात्मक संतुलन और नैतिक विकास। शिक्षा संवाद, 14(3), 33–40।
7. गुप्ता, पी. (2018). विद्यालयी गतिविधियों का नैतिक मूल्यों पर प्रभाव। शोध पत्रिका, 6(2), 92–98।
8. सिंह, ए. (2019). ग्रामीण और शहरी छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन। मनोविज्ञान शोध, 15(2), 67–75।
9. चौहान, डी. (2019). किशोरों के नैतिक मूल्य और पारिवारिक संरचना। भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 34(1), 21–28।
10. शुक्ला, क. (2020). माध्यमिक स्तर पर जीवन कौशल शिक्षा और नैतिक मूल्य। राष्ट्रीय शिक्षा शोध पत्रिका, 22(1), 88–95।
11. कुमारी, स. (2020). भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षिक सफलता का सहसंबंध। शिक्षा शोध, 11(3), 42–50।
12. गुप्ता, आर. (2021). किशोरों में सहानुभूति और नैतिक विकास का अध्ययन। मनोविज्ञान और समाज, 9(4), 101–108।
13. वशिष्ठ, ए. (2021). विद्यालयी वातावरण और नैतिक मूल्यों के विकास का विश्लेषण। शोध संगम, 7(2), 69–77।
14. सिंह, जे. (2022). माध्यमिक स्तर के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नैतिक मूल्य। आधुनिक शिक्षा समीक्षा, 19(2), 56–64।
15. चौधरी, ए. (2022). किशोरावस्था में नैतिक मूल्य ह्रास के कारण और समाधान। भारतीय शिक्षा पत्रिका, 27(1), 33–41।
16. यादव, एन. (2023). ग्रामीण किशोरों में भावनात्मक परिपक्वता का सामाजिक जीवन पर प्रभाव। शैक्षिक विमर्श, 17(3), 115–123।
17. मिश्रा, पी. (2024). किशोरों में नैतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु नवाचार। शोध वार्ता, 12(1), 49–57।
18. शर्मा, क. (2017). भावनात्मक शिक्षा का नैतिक विकास पर प्रभाव। समकालीन शिक्षा, 9(2), 71–78।
19. जोशी, ए. (2015). किशोरों में भावनात्मक नियंत्रण की भूमिका। मनोविज्ञान समीक्षा, 18(1), 55–62।
20. सिंह, वी. (2011). माध्यमिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा का महत्व। भारतीय शिक्षा पत्रिका, 14(4), 88–94।